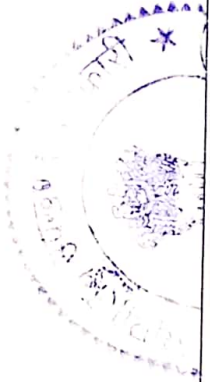


21.12.18

11
पत्रावली पेश। वकील वादी उपर है।
प्रतिवादी नम्बर 2 द्वारा मॉक रिपोर्ट -
अपने पत्रांक नं. अ. 18/5440 दिनांक
21.12.18 द्वारा पेश की गई, शामिल मिल
है।

विज्ञान अधिवक्ता वादी को सुना गया
पुनः बहस विज्ञान अधिवक्ता वादी
का कथन है कि वादमूल इमि के



तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>साबिक खसरा नम्बर ४० फवा २११ एष १३६ फवा ७११ की वादी द्वारा जारिये रिजिस्टर्ड लेटर डीड क्रम सी पी उफा इमि की वादी समय पर अपने नाम राज्य रिकार्ड में अमल इलाम नहीं कवा पाया। उफा इमि के बाद बन्हा बन्हा डाल खसरा नम्बर ६५ फवा ०.४६ हेक्टर २२५ फवा ०.०१ हे. व २२६ फवा १.१७ हेक्टर - पैजुद किये गये हैं। हेला द्वारा इमि लय करने के उपान्त से ही उफा इमि पर हेला अर्मात वादी का ही कवा काल चना आ रहा है। वादी द्वारा उफा इमि पर खुधा के नजिये से एक कुआ खुदाया है, जिसकी लार्ड पैलेफा लफा सकार द्वारा पैरा की गई मौका रिपोर्ट से होती है। उफा इमि सहवन से बेचान कर्ता के नाम पर दर्ज गई। बेचान कर्ता की मृत्यु हो चुकी है। तथा उसके कोई खुलमी वारिस मौजूद नहीं है। हेला और नजियेदार की लार बेहिसमत खालेदा वारी नाबिग चना आ रहा है। उफा इमि के अधिगृहीत किया जाकर मुभावका लय कर दिया गया है। पाल्द सहवन से उफा इमि पूर्व खालेदा बेचान कर्ता के ही नाम पर दर्ज चली आने से वादी के नाम पर मुभावका का मिर्धाला बही किया गया। वादी द्वारा अपने समस्त जीवन से कमाई का पैसा लगा कर वादगत इमि कुय कर कवा लाता किया था। यदि उफा इमि का मुभावका वादी के अदा नहीं किया</p>	

तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तारीख में जारी हुए
---------------	-----------------------------------	---

गया जो वादी के जीविका के समस्त स्त्रोत समाप्त हो जावेगा। जीविका जीवन का आधार होता है, और यदि वादी की जीविका ही समाप्त हो जाती है, तो वादी के समस्त अपने और अपने परिवार के भरण-पोषण का गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। अतः वादगत भूमि का वादी को स्वतंत्र अधिकारी घोषित करना नए रिफार्ड में वादी का नाम दर्ज कटाया जावे तथा अधिगृहीत भूमि का मुआवजा वादी के नाम पर भदा करने का आदेश क्रमांक जावे।

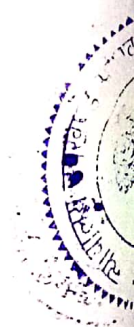
बाद बहस हमने पर्यावली का आधीपान्त मनन अवलोकन किया। वादी द्वारा वादपत्र में वर्णित तथ्य, वाचिक अनुलोषादि, प्रत्यक्ष वादी एक वही के जवाब, रिपोर्ट सहस्रपदा रामगंजमण्डी एवं वादी द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजात पर सम्मक विधि संगत विचार किया गया।

बहस विधान अधिवक्ता वादी पर मनन किया। दौरान बहस विधान अधिवक्ता वादी द्वारा इस न्यायालय के पूर्व उकाल मि० नं० 88/08 वाद U/S 88-89, 188 R. T. Act दुर्गलाल व नाम राजस्थान सरकार की प्रति प्रस्तुत नए निवेदन किया कि पूर्व में ताकली बांध परियोजना में अवाप्त भूमि में इस उकाल के निर्णय प्रारित किये जा चुके हैं। उकाल की समानता को देखते हुए वादी को राहत छदान।



<p>तारीख हुकम</p>	<p>हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज</p>	<p>नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए</p>
	<p>ज़ी जान का निवेदन किया गया। हल्ब रजिस्टर्ड वयनामा वादी डारा ग्राम शून्दी ज़ी शूमि साबिक खसरा नम्बर ४० (कबा ४१)१ व १३८ (कबा ७१)१ किला २ (कबा १२१)२ हुकम कर शब्दा प्राप्त किया है। हल्ब कर मिदान उक्त शूमि के हाल खसरा नम्बर ६२ (कबा ०.२६ हे०, २२५ (कबा ०.०१ हे० व २२६ (कबा १.१७ हे० पर किया गया है। प्रकृत वगैरि उक्त साबिक नम्बरान के हाल नम्बर दूरवत विहैला के नाम पर ही दर्ज है। प्रकृत में वादी डारा स्वातंत्र्य ज़ी घोषणा चाही है, जो निम्न शर्तों से रिया जाना उचित नहीं पाया जाता है। क्योंकि रजिस्टर्ड विक्रय पर अवलोकन से वादी का स्वातंत्र्य घोषणा हल्ब पर मजबूत है, क्योंकि विहैला डारा एजिड सेल जीड के उपरान्त विहैला के स्वातंत्र्य अधिकारी का अवलान होना है। ज़ी स्वातंत्र्य हल्ब आता ६३ के अनुसार प्राप्त हो जाना चाहिए किन्तु उक्त शूमि का शूमि अर्जन अधिनियम के प्रावधानों के तहत अधिग्रहीत किया जा चुका है, ऐसी प्रकार में शूमि से संबंधित राजस्व रिकार्ड के खाल के गैलम पर किसी</p>	



तारीख हुकम	हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज	नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए
	<p>भी आसामी (जो धारा 5(43) में वर्णित है, के खल्व अवशेष नहीं रह जाते हैं अतः खालेदारी घोषणा का अनुलोप दिया जाना उचित नहीं पाया जाता।</p> <p>हम इस न्यायालय द्वारा पूर्व में पारित निर्णय मि० नं० १४/०४ वाद भन्सारिका ४४-४९-१४४ निर्णय दिनांक २५.११.१० से सहमत व्यक्त किया जाना उचित पाते हैं, कि इस प्रकार अधिग्रहण होने के उपरान्त जब भूमि पर खालेदारी के खालेदारी खल्व समाप्त हो जाते हैं तो खल्व की घोषणा का कोई अनिचित्य अवशेष ही नहीं रहता।</p> <p>अतः प्रकरण पर खालेदारी घोषणा के संबंध में धारा 63 के प्रावधानों के तहत अन्य विवेचना अपेक्षित नहीं है।</p> <p>प्रकरण में यह तथ्य है, कि विचारित भूमि पर विगत 30-35 वर्षों से वादी का अन्वयता कब्जा रहा है। प्रका भी वादी द्वारा खुदवाया गया है। जैसा कि लक्ष्मीकान्त श्री रिपोर्ट से प्रमाणित है।</p> <p>फुट मिता कट वादगत भूमि पर जिस खालेदारी का गण अंकित है, वह वर्तमान परिदृश्य में दिवावरी रह जाता है।</p> <p>प्रकरण में यह भी तथ्य है, कि वादगत भूमि का वादी द्वारा सन् १९७९</p>	

<p>तारीख हुकम</p>	<p>हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज</p>	<p>नम्बर व तारीख अहकाम जो इस हुकम की तामील में जारी हुए</p>
-----------------------	--	---

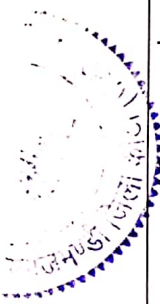
में कृत किया है, और खरीदने और रजिस्ट्रेशन
खेलडीड के उपलब्ध वादी का रिकार्ड
में भरने ही अधिकारी नहीं किया गया है
परन्तु विक्रेता के स्वत्व समारण पत्र
केवा के स्वत्व प्राप्त हो जाते हैं।

यदि श्रमि का अधिकारी कट लिया
जाता है, तो केवा ही मुभावजे का पाम
रहता है।

हमने ककाल के गुणावगुण पर
समझ विचार किया। वादी का वाकाल
श्रमि पर स्वत्व की घोषणा और रिकार्ड
दुकस्ती का अधिकारी नहीं पाया जाकर
न्यायालय में मुभावजे का ही अधिकारी
पाया जाता है।

अतः वाद वादी इसी प्रकार निर्गित
कट औरेश रिसे जाते हैं, कि वादी श्रमि
अवर्तित अधिकारी के समस्त पत्र पत्र पर
कट अपनी समस्त औपचारिकता पूर्ण
कट नियमानुसार मुभावजा शरित का
हकदार होगा।

निर्णय की श्रमि एवं मुभावजा
से संबंधित सभी पत्रों का भिजवाया जाये।
प्रभावनी केसक सुमाट होकर 20/30 है।
निर्णय आज दि. 21.12.18 को सर्वज्ञान सुनाया।



(के. ज. ज. ज. ज.)
उपवेड अधिकारी
रामगंजम061